



PAPER ID - SRIJANSHODH2026-08

भारतीय संस्कृति एवं लोकगीतों की परम्परा से पोषित कला में नवाचार: चित्रकार रामशब्द सिंह के विशेष संदर्भ में

शबाहत

शोधार्थी: ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग, रघुनाथ गुल्स पी.जी कॉलेज मेरठ
ईमेल: ansarishabahat@gmail.com

प्रोफेसर अर्चना रानी

विभागाध्यक्षा: ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग, रघुनाथ गुल्स पी.जी कॉलेज मेरठ
ईमेल: drarchana.art@gmail.com

सारांश:

प्रस्तुत शोध-पत्र के अन्तर्गत समकालीन लोक चित्रकार रामशब्द सिंह अपनी चित्रकृतियों में भारतीय लोक जीवन, संस्कृति, विश्वास, सामाजिक जीवन तथा लोक परम्पराओं को लोकगीतों के रूप में प्रयोग करके अपनी अभिव्यक्ति प्रदान की। उनकी कलाकृतियों में अंकित लोकगीत केवल शब्दों के रूप में उपस्थित नहीं हैं, अपितु वह चित्र के भाव को, कथाओं को और सांस्कृतिक पहचान से जोड़ते हैं। चित्र एवं लोकगीत का यह समन्वय दर्शकों को लोक-जीवन की संवेदनाओं, सामूहिक स्मृतियों और सांस्कृतिक पहचान से जोड़ता है। समकालीन चित्रकार रामशब्द सिंह की कला में लोक चित्रों के साथ लोकगीत भारतीय लोक संस्कृति को एक नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं। राम शब्द सिंह की कला या चित्रों में भारतीय लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति का उदाहरण प्रदान करती है। उन्होंने अपने चित्रों में लोक गीतों को केवल सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में ही नहीं अपितु लोक जीवन की मूल जावनाओं एवं अभिव्यक्ति की है रामशब्द सिंह के चित्रों में धार्मिक, विवाह, जन्म उत्सवों पर गाए गये चित्रों का जो समन्वय समकालीन कला के साथ मिलता है वह नवीनताय के साथ भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का संवाहक है। उनकी कला प्राचीन परम्परा एवं आधुनिकता को जोड़ने के कार्य करती है। लोकगीत भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं, जो समय के परिवर्तन के बावजूद आज भी लोकजीवन की पहचान, सांस्कृतिक निरंतरता तथा सामाजिक एकता को सुदृढ़ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। रामशब्द सिंह की चित्रकृतियों में लोकगीतों की अभिव्यक्ति, उनके प्रतीकात्मक महत्व तथा समकालीन भारतीय कला में उनके योगदान का अध्ययन किया गया है।

शब्द संकेत: लोकगीत, लोककला, परम्परा, समकालीन कला, लोक अभिव्यक्ति, संस्कृति ।

प्रस्तावना:

भारत में अनेक लोककलाएँ प्राचीन काल से विद्यमान हैं। इन लोककलाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं परम्परा पीढ़ियों में स्थानांतरित होती आ रही है। समाज में प्रचलित कथाओं एवं परम्पराओं के साथ लोकगीतों का प्रयोग होता आया है। कलाकार रामशब्द सिंह इन्हीं लोककलाओं को आधुनिक ढंग से चित्रित करके उनके साथ लोकगीतों का समन्वय प्रस्तुत करते हैं। कलाकार रामशब्द सिंह की कला में लोक संस्कृति, धार्मिक संस्कार, लोक कथाओं तथा सामाजिक सन्दर्भों के साथ लोकगीतों के प्रयोग को



समझना आवश्यक है। चित्र एवं लोकगीतों का जो समन्वय है, उसके माध्यम से लोककला में दृश्य एवं सम्प्रेषण के साथ लोकजीवन की संवेदनाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की भूमिका को भी समझा जा सकता है। इस शोध पत्र के माध्यम से भारतीय लोककला एवं लोक अभिव्यक्ति की परम्परा में लोकगीतों के ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को समझना उद्देश्य है। प्राचीन लोककलाओं एवं कथाओं के साथ लोकगीतों का प्रयोग एक नवीन दृष्टिकोण के साथ आधुनिक कला जगत को प्रभावित करता है। यही इस शोध-पत्र का प्रमुख विषय है।

शोध-पत्र लेखन का उद्देश्य:

शोध-पत्र लेखन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति एवं लोकगीतों की परम्परा से पोषित कला में नवाचार को रेखांकित करना है। विशेषतः चित्रकार रामशब्द सिंह के संदर्भ में यह अध्ययन लोकधारा और आधुनिकता के संगम को उजागर करता है जिससे परम्परा और सृजनशीलता का संतुलित रूप सामने आता है।

शोध-पत्र का साहित्यावलोकन:

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रकाशन हेतु जिन पुस्तकों का अध्ययन एवं अवलोकन किया गया है, उनमें प्रोफेसर अर्चना रानी की पुस्तक रचनात्मक अभिव्यक्ति (लोक परम्परा और आधुनिक कला, प्रकाशन: चित्रकला विभाग, आर.जी. पी.जी. कॉलेज, प्रथम संस्करण, 2023), प्रो. हेमलता अग्रवाल की पुस्तक भारतीय लोक एवं आदिवासी कलाओं के विविध रूप, प्रगति प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण, 2024), प्रो. अर्चना रानी की पुस्तक-कला में धार्मिक संलयन, प्रकाशन: चित्रकला विभाग, आर.जी. पी.जी. कॉलेज, मेरठ, 2020), नरेन्द्र सिंह यादव एवं यशवंत की पुस्तक-कला के नवीन स्वरूप, प्रकाशन: हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, तृतीय संस्करण, 2019) तथा प्रोफेसर अर्चना रानी की पुस्तक भारत की लोक कलाएँ, प्रकाशन: चित्रकला विभाग, आर.जी. पी.जी. कॉलेज, मेरठ, 2015) आदि का अवलोकन किया गया है।

शोध-पत्र प्रक्रिया एवं महत्व:

प्रस्तुत शोध-पत्र की प्रक्रिया मुख्य रूप से वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि पर आधारित है, जिसमें भारतीय समकालीन कलाकार रामशब्द सिंह की कलाकृतियों में लोककला के साथ लोकगीतों के प्रयोग का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत कलाकार रामशब्द सिंह की मूल कलाकृतियों, कला प्रदर्शनियों, एकल एवं सामूहिक प्रदर्शनियों से संबंधित दस्तावेजों तथा कलाकार से लिए गए साक्षात्कार का अध्ययन किया गया है। शोध-पत्र की प्रक्रिया में विषय चयन, साहित्य समीक्षा, डेटा संकलन, विश्लेषण और निष्कर्ष प्रस्तुति शामिल होती है। इसका महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह भारतीय संस्कृति और लोकगीतों की परम्परा से पोषित कला में नवाचार को अकादमिक रूप से प्रमाणित करता है। चित्रकार रामशब्द सिंह के संदर्भ में यह अध्ययन परम्परा और आधुनिकता के संगम को समझने का अवसर प्रदान करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का महत्व भारतीय लोक अभिव्यक्ति में लोकगीतों के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक महत्व को उजागर करना तथा कलाकार रामशब्द सिंह की कला में लोक परम्परा और आधुनिक कला के अंतर्संबंधों को समझने में सहायता प्रदान करना है।

भारतीय लोक-गीत परम्परा:

लोक साहित्य भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जो जनसामान्य के जीवनानुभवों, विश्वासों, परम्पराओं तथा सांस्कृतिक मूल्यों की मौखिक अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हुआ है।¹ इसका सृजन किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि सम्पूर्ण लोकसमुदाय द्वारा सामूहिक रूप से होता है और यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परम्परा के माध्यम से संचारित होता रहता है। लोक साहित्य में लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकनाट्य, कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ तथा लोक विश्वास जैसे विविध रूप सम्मिलित हैं।² यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि समाज की ऐतिहासिक स्मृतियों, धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना का



सशक्त वाहक भी है। लोक साहित्य के माध्यम से किसी क्षेत्र की भाषा, बोली, रीति-रिवाज, जीवन-पद्धति तथा सामुदायिक अनुभवों का संरक्षण होता है।³ विशेष रूप से लोकगीत, लोक साहित्य की सर्वाधिक जीवंत विधा हैं, जिनमें जन्म, विवाह, कृषि, ऋतु-परिवर्तन, पर्व-त्योहार तथा धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े लोकजीवन का सहज एवं भावपूर्ण चित्रण मिलता है।⁴

भारत में लोक गीतों की परम्परा भारतीय संस्कृति की प्राचीन धरोहर है। लोक गीत लोक जीवन की सहज अभिव्यक्ति होते हैं जिनका सामान्य जनजीवन, जीवन के अनुभवों, भावनाओं तथा सामाजिक उत्सवों से हुआ है।⁵ भारत प्रत्येक स्थान पर भिन्न-भिन्न परम्परा रही है प्रत्येक क्षेत्र की अपनी परम्परा रही है मानव जीवन के प्रत्येक अवसरों पर भिन्न संस्कार किये जाते हैं जैसे जन्म, नामकरण, विवाह, कृषि कार्य, ऋतुओं के परिवर्तन, त्योहार एवं धार्मिक अनुष्ठान आदि के अवसर पर गीत गाए जाते हैं।⁶ इन लोक गीतों को केवल मनोरंजन हेतु ही नहीं गाया जाता, अपितु यह किसी कहानी, घटना या धार्मिक कथाओं को उस अवसर के अनुसार गाया जाता है जो भारतीय संस्कृति के संवाहक के रूप में कार्य करते हैं। इसी कारण भारतीय लोकगीत भारतीय लोक संस्कृति की जीवंत पहचान प्रदान करते हैं! इन भारतीय लोकगीतों में कुछीत प्रमुख रूप प्रसिद्ध जिन्हे लोक गीतों के रूप में गाया जाता है जैसे हरहठ, अहोई अष्टमी, गणेश जी, लेटा कै बेटा, यमद्वितीया भाई दूज, आसगाई, नागपंचमी संकट (सकट चौथ), हलषष्ठी,

करवाचौथ आदि कथाएँ मिलती हैं और लोकगीतों के अंतर्गत शुभ शकुन सोहर (गंगा का महत्व, पुत्र देने वाली) तुलसी की संचत, गणेश गीत, कार्तिक के गीत, गंगा, तुलसी, गोवर्धन आदि पाये जाते हैं। यही लोकगीत भारतीय संस्कृति संवाहक हैं।⁷

भारतीय संस्कृति में लोक गीतों का महत्त्व:

मधुबनी लोककला बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र में पाई जाती है। बिहार राज्य के मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर तथा बेगूसराय आदि जिले मिथिला क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। बिहार की लोककला में मुख्य रूप से भारतीय लोक संस्कृति तथा लोकगीतों की समृद्ध परम्परा देखने को मिलती है।⁸ इन लोकचित्रों के साथ मैथिली लोकगीतों का विशेष महत्व है। मिथिला चित्रकला में जहाँ सीता-राम विवाह का चित्रण मिलता है, वहीं विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले मंगलगीत, समदाउन तथा अन्य लोकगीत भी इस परम्परा का अभिन्न अंग हैं। इसके अतिरिक्त कोहबर कला में विवाह संस्कारों से जुड़े लोकगीतों का गायन किया जाता है। देवी-देवताओं के चित्रों के साथ भक्ति-गीत एवं स्तुति-गीत गाए जाते हैं, जो धार्मिक अनुष्ठानों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवंत बनाए रखते हैं।⁹

भारत के पूर्वी क्षेत्र में कोहबर कला एक महत्वपूर्ण लोकचित्र परम्परा है। इसका संबंध विवाह संस्कारों से है। कोहबर चित्रों में नवविवाहित दंपति के मंगलमय जीवन की कामना व्यक्त की जाती है। इन चित्रों के निर्माण एवं विवाह संस्कारों के दौरान मंगलगीत, सोहर तथा अन्य पारम्परिक लोकगीत गाए जाते हैं। इस प्रकार कोहबर चित्रकला और लोकगीत एक-दूसरे के पूरक हैं तथा भारतीय लोकसंस्कृति की समृद्ध परम्परा को अभिव्यक्त करते हैं। पिचवाई चित्रकला राजस्थान की प्रसिद्ध लोकचित्र शैली है, जिसमें श्रीनाथजी की लीलाओं, विभिन्न उत्सवों तथा धार्मिक अवसरों का चित्रण किया जाता है। इन धार्मिक आयोजनों में ब्रजभाषा के भजन, पद तथा लोकगीतों का गायन किया जाता है। ये लोकगीत चित्रों की भावाभिव्यक्ति को सशक्त बनाते हैं तथा भक्तिभाव को और अधिक प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करते हैं। पट्टचित्र ओडिशा की प्रमुख लोकचित्र शैली है। यह परम्परागत रूप से कपड़े पर बनाई जाती है।¹⁰ इसमें भगवान जगन्नाथ, दशावतार तथा पौराणिक कथाओं का चित्रण किया जाता है। इन चित्रों के साथ जगन्नाथ भजन, कीर्तन तथा लोकगीतों की समृद्ध परम्परा जुड़ी हुई है। लोकगीतों के माध्यम से धार्मिक कथाओं का लोकजीवन में प्रचार-प्रसार होता है। कलमकारी कला आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना की प्रसिद्ध लोकचित्र शैली है। यह भी वस्त्रों पर चित्रित की जाती है। कलमकारी चित्रों में रामायण, महाभारत तथा अन्य पौराणिक कथाओं का चित्रण मिलता है। इन कथाओं के साथ लोकगीत एवं भक्ति-गीत गाए जाते हैं, जो चित्रों की कथा को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। गोंड चित्रकला मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातीय लोकचित्र शैली है। यह प्रकृति, पशु-पक्षी, जनजातीय जीवन तथा लोकविश्वासों पर आधारित है। गोंड समुदाय के लोकगीत इन चित्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को अभिव्यक्त करते हैं। समकालीन कलाकार भी अपनी चित्रकृतियों में लोकगीतों की सांस्कृतिक संवेदनाओं को जोड़कर नवीन अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर रहे हैं।¹¹

इस प्रकार भारतीय लोककलाओं में लोकगीतों का प्रयोग धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक परम्परा, सामाजिक चेतना तथा लोकजीवन की स्मृतियों को संरक्षित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। लोकचित्र और लोकगीत मिलकर भारतीय संस्कृति की निरंतरता, सामूहिक चेतना तथा लोक परम्पराओं को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करते हैं।¹²



कलाकार रामशब्द सिंह का कला-जीवन:

रामशब्द सिंह जी का जन्म 01 जुलाई सन 1950 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के अहरौली नामक ग्राम में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम श्री सत्यनारायण सिंह तथा माता का नाम श्रीमती पवधारी देवी था। उनके पिता मुंबई में कार्यरत थे तथा बाद में बस सेवा में इंस्पेक्टर के पद पर कार्य करने लगे। उनकी माता एक गृहिणी थीं। डॉ. रामशब्द सिंह एक कृषक परिवार से संबंध रखते हैं। उनके दादा कृषि कार्य की देखभाल करते थे। रामशब्द की प्रारम्भिक शिक्षा उनके पैतृक गाँव अहरौली में हुई। इंटरमीडिएट की शिक्षा लालगंज स्थित इंटर कॉलेज से प्राप्त की। इंटरमीडिएट के दौरान उनके अध्यापक श्री श्याम नारायण ने उन्हें आई.जी.डी. बॉम्बे आर्ट के डिप्लोमा हेतु प्रेरित किया। उस समय आजमगढ़ में यह सुविधा उपलब्ध न होने के कारण उन्होंने वाराणसी के डी.ए.वी. कॉलेज से यह डिप्लोमा किया।

डिप्लोमा पूर्ण होने के पश्चात उन्होंने अपने संबंधियों के साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय एवं भारत कला भवन का भ्रमण किया। इस यात्रा से प्रेरित होकर उन्होंने वहीं से कला शिक्षा प्राप्त करने का निर्णय लिया। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वर्ष 1970 में बी.एच.यू. के ललित कला संकाय में प्रवेश लिया तथा वहीं से स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्राप्त कीं। शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत उन्होंने खतौली के जैन डिग्री कॉलेज में अध्यापक के रूप में कार्यभार संभाला। वर्ष 2012 में वे इसी महाविद्यालय से चित्रकला विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए। रामशब्द सिंह की रुचि प्रारम्भ से ही कला के प्रति रही। वे अपने आसपास होने वाली पारम्परिक लोककलात्मक गतिविधियों को गहराई से देखते और उनसे प्रेरणा ग्रहण करते थे। उन्होंने मेरठ विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। उनका शोध विषय वाराणसी की लोककला पर आधारित था, जो लोककला परम्पराओं के अध्ययन, संरक्षण एवं विश्लेषण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है।¹³

भारतीय संस्कृति एवं लोकगीतों का नवाचार:

भारत में प्राचीन काल से लोककलाएँ मानव अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही हैं। भारत के विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों में विविध प्रकार की लोककलाएँ प्रचलित हैं। लोककलाओं का उद्देश्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा लोक-जीवन को अभिव्यक्त करने का प्रभावी माध्यम रही हैं। भारतीय लोककलाओं के साथ लोकगीतों की परम्परा भी समान रूप से विकसित हुई है। मधुबनी, पिथौरा, फड़, वरली, संधाल तथा राजस्थान की लोककलाओं में लोकगीतों की समृद्ध परम्परा देखने को मिलती है। इन्हीं लोकपरम्पराओं को समकालीन कलाकार नवीन रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। कलाकार रामशब्द सिंह भी अपनी चित्रकृतियों में भारतीय लोकगीतों की सांस्कृतिक चेतना को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करते हैं। भारतीय लोककला से प्रभावित समकालीन कलाकार रामशब्द सिंह की कला में भारतीय लोकपरम्परा के साथ सामाजिक विश्वास, धार्मिक आस्थाएँ, लोककथाएँ तथा लोकगीतों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने भारतीय परम्परा को नवीन दृष्टि तथा अकादमिक गहराई के साथ अपनी कला में प्रस्तुत किया है। उनकी चित्रकृतियाँ भारतीय लोकसंस्कृति का सशक्त उदाहरण हैं, जिनमें धार्मिक प्रतीकों और लोकगीतों का प्रभावशाली समन्वय देखने को मिलता है।¹⁴ रामशब्द सिंह के चित्रों में विशेष रूप से पूर्वांचल तथा मिथिला की लोकसंस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। उनके चित्रों में विवाह, पूजन, संस्कार तथा पारम्परिक लोकगीतों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनके सभी चित्र आकर्षक, संतुलित तथा भावपूर्ण हैं। उनकी एक प्रसिद्ध चित्रकृति विवाह संस्कार से सम्बन्धित है। इसमें भारतीय लोककला से प्रभावित रंग-योजना का प्रयोग किया गया है। चित्र में गणेश की आकृति, चारों ओर पुष्प अलंकरण तथा पक्षियों की आकृतियाँ अंकित हैं। यह चित्र लोककला की सजावटी शैली और कथात्मक संरचना को व्यक्त करता है। इस चित्र की भावभूमि विवाह से जुड़े मंगलगीतों की सांस्कृतिक परम्परा से प्रेरित है। रामशब्द सिंह की एक अन्य चित्रकृति में पारम्परिक लोकचित्र शैली के साथ विवाह लोकगीतों की सांस्कृतिक अनुभूति का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार उनके अधिकांश चित्रों में लोकगीतों की संवेदना चित्रों की आत्मा बनकर उभरती है। उनकी चित्ररचनाओं की संरचना अत्यन्त संतुलित एवं अनुशासित है।¹⁵ चित्र मुख्यतः कथानक के समान प्रभाव उत्पन्न करते हैं। चित्रों में कहीं-कहीं पारम्परिक सीमाएँ (बॉर्डर) तथा लोक अलंकरण का प्रयोग किया गया है। कलाकार रामशाहद सिंह ने कोहबर विषय पर अनेक चित्र बनाए हैं, जिनमें विवाह से जुड़े लोकगीतों की सांस्कृतिक भावना स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अहोई अष्टमी पर भी चित्र बनाए हैं, जिनमें माता की आराधना से जुड़े पारम्परिक लोकगीतों की अनुभूति दिखाई देती है। नागपंचमी विषयक चित्रों में भी नागपंचमी पर्व से जुड़े लोकगीतों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति मिलती है। इस प्रकार उनके लगभग सभी चित्रों में लोकगीतों का प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विद्यमान है।

रामशब्द सिंह की चित्रकृतियों में रंग-योजना अत्यन्त प्रभावशाली है। उनके चित्रों में नारंगी, लाल, पीला, हरा तथा सफेद रंगों का संतुलित प्रयोग दिखाई देता है। ये रंग भारतीय लोकजीवन, धार्मिक आस्था, ऊर्जा, समृद्धि तथा सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। उनकी रंग-योजना पारम्परिक लोककला और आधुनिक चित्रभाषा का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती है। नारंगी एवं लाल रंग शुभता, ऊर्जा तथा आस्था का प्रतीक हैं, जबकि हरा रंग जीवन, प्रकृति एवं समृद्धि का द्योतक है। रंगों का सपाट प्रयोग भारतीय लोकचित्र परम्परा की विशिष्ट पहचान को और अधिक सशक्त बनाता है।¹⁶ रामशब्द सिंह के चित्रों में लोकगीतों का प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली एवं अर्थपूर्ण है। उन्होंने लोकगीतों को चित्रों की भावभूमि, कथानक तथा सांस्कृतिक संदर्भों से इस प्रकार जोड़ा है कि वे चित्रों का अभिन्न अंग बन जाते हैं। लोकगीतों की संवेदना,



भाव एवं सांस्कृतिक अर्थ उनके चित्रों को एक मौलिक और विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। यही विशेषता उन्हें समकालीन भारतीय कला जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाती है।

निष्कर्ष:

भारतीय लोक अभिव्यक्ति में लोकगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक स्मृति, धार्मिक आस्था तथा सामाजिक चेतना के सशक्त संवाहक हैं। कलाकार रामशब्द सिंह की कला इस तथ्य को अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती है। उनके चित्रों में लोकगीत चित्रों की भावाभिव्यक्ति का अभिन्न अंग बनकर उपस्थित हैं, जिससे चित्रों की सांस्कृतिक एवं भावात्मक गहराई और अधिक समृद्ध हो जाती है। रामशब्द सिंह की चित्रकला में प्रयुक्त लोकगीत भारतीय लोककथाओं, धार्मिक विश्वासों तथा लोकजीवन की अनुभूतियों को नवीन कलात्मक रूप प्रदान करते हैं। उनके चित्र दर्शकों को केवल सौन्दर्यबोध ही नहीं कराते, बल्कि भारतीय लोकसंस्कृति एवं लोकगीतों की समृद्ध परम्परा से भी जोड़ते हैं। इस प्रकार रामशब्द सिंह की कला समकालीन भारतीय कला में लोकगीतों की सांस्कृतिक भूमिका को स्थापित करती है तथा लोकपरम्परा और आधुनिक कला के मध्य एक सशक्त सेतु का कार्य करती है। उनके इस योगदान के कारण समकालीन भारतीय कला जगत में उनका स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है।

सन्दर्भ—ग्रंथ सूची:

1. उपाध्याय, कृष्णदेव— लोक साहित्य की भूमिका. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2019, . पृ०स० 15—18.
2. सत्येन्द्र, डॉ.— लोक साहित्य विज्ञान. जोधपुर: राजस्थानी ग्रन्थागार, 2017, पृ०स० . 28—35.
3. परमार, श्याम— भारतीय लोक साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ०स० . 52—58.
4. उपाध्याय, कृष्णदेव— लोक साहित्य की भूमिका. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2019, पृ०स० . 72—76.
5. उप्रेती, डा० कुन्दनलाल— लोक साहित्य के प्रतिभान, अलीगढ़ भारत प्रकाशन मंदिर , पृ०स० 43—93, 125— 166.
6. चतुर्वेदी, मंजुला— भारतीय लोककला के अभिप्राय वाराणसी: कला प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2001, पृ० स० 205—222.
7. अग्रवाल प्रो० हेमलता, कुमारी आकाक्षा— भारतीय लोक एवं आदिवासी कलाओं के विविध रूप, प्रगति प्रकाशन मेरठ प्रथम संस्करण, पृ०स० 9, 11, 14, 36
8. रानी, प्रो० अर्चना— भारत की लोक कलाएं प्रथम संस्करण 2015. चित्रकला विभाग आर० जी० पी० जी० कॉलेज, मेरठ, पृ०स० 143
9. कासलीवाल, मीनाक्षी, भारती— ललित कला के आधारभूत सिद्धांत, जयपुर हिंदी ग्रंथ अकादमी, चौथा संस्करण 2013, पृ०स० 29
10. गुप्ता, नीलिमा— चित्रकला एवं लोक कलाओं के सिद्धांत एवं तकनीक, प्रगति प्रकाशन मेरठ, प्रथम संस्करण 2022, पृ०स० 113, 115
11. रानी, प्रोफेसर अर्चना— कला में धार्मिक संलयन, आर० जी० पी० जी० कॉलेज, मेरठ, पृ०स० 211
12. चौहान, विद्या— लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आगरा: प्रगति प्रकाशन, पृ०स० 73 ,90 ,94 ,96



13 रानी, प्रो० अर्चना, रचनात्मक अभिव्यक्ति— लोक, पारंपरिक और आधुनिक कला, कला में धार्मिक संलयन—चित्रकला विभाग आर० जी० पी० जी० कॉलेज, मेरठ, प्रथम संस्करण, 2023, पृ० स० 133, 134

14 <https://florescenceartgallery.com/>

15 शर्मा ,चंद्र ,लोकेश— भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, गोयल प्रकाशन मेरठ, पृ० स० 186 —191

16 रानी, ममता— कला संस्कृति एवं विरासत, प्रशासन विभाग नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2024, पृ० स० 09 ,180 , 197.